प्रो० रोशर के अनुसार :—

"अर्थशास्त्र के प्रारम्भिक बिन्दु एवं लक्ष्य मानव है।"

प्रो० रोशर की विचारधारा का प्रतिपादन करते हुये प्रो० मार्शल ने भी अर्थशास्त्र की जो परिभाषा दी वह मानव कल्याण पर ही आधारित थी उन्होंने अर्थशास्त्र की परिभाषा निम्न प्रकार से दी :—

प्रो० मार्शल के अनुसार :—

"अर्थशास्त्र मानव-जीवन के साधारण व्यवसाय का अध्ययन है। इसमें व्यक्तिगत तथा सामाजिक क्रियाओं के उस भाग की जाँच की जाती है जिसका भौतिक सुख के साधनों की प्राप्ति और उपयोग से अत्यन्त निकट का सम्बन्ध है।"

प्रो० पीगू के अनुसार :—

"अर्थशास्त्र आर्थिक कल्याण का अध्ययन है। आर्थिक कल्याण सामाजिक कल्याण का वह भाग है जिसका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मुद्रा के मापदण्ड से सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है।"

प्रो० केनन के अनुसार :—

"राज्य-अर्थव्यवस्था (अर्थशास्त्र) का उद्देश्य उन सामान्य कारणों की व्याख्या करना है जिन पर मानव का भौतिक कल्याण निर्भर है।"

प्रो० पेन्सन के अनुसार :—

"अर्थशास्त्र भौतिक कल्याण का विज्ञान है।"

कल्याण केन्द्रित परिभाषाओं की आलोचना :—

अर्थशास्त्र की कल्याण पर आधारित सभी परिभाषाओं में एक बात सामान्य है और वह है - आर्थिक कल्याण की जिसको व्यवहारिक रूप में व्याख्या नहीं की जा सकती है क्यों कि कल्याण सम्बन्धी धारणा सार्वभौमिक है और न ही इसका कोई प्रमाणिक मापदण्ड है।

इन परिभाषाओं में अर्थशास्त्र के विषय क्षेत्र को संकुचित कर दिया गया है। मानव कल्याण में वृद्धि केवल भौतिक साधनों से या भौतिक क्रियाओं से ही नहीं होता बल्कि सेवा-भावना एवं सहयोग की भावना से भी मानव कल्याण में वृद्धि होती है।

इस लिये हम कह सकते है कि अर्थशास्त्र की मानव कल्याण-केन्द्रित परिभाषाओं में अनेक कमी है।

दुर्लभता या सीमित साधन केन्द्रित परिभाषा :—

सर्वप्रथम मार्शल की कल्याण केन्द्रित परिभाषा की आलोचना करते हुये सन् 1932 में रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र पर एक नयी विचारधारा को प्रस्तुत किया जिसे सीमित साधन सम्बन्धी परिभाषा का नाम दिया गया। प्रो० रॉबिन्स का यह मानना था कि मानव की आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाले साधनों की मात्र कम है। इस लिए अर्थशास्त्र में इस बात का अध्ययन करना चाहिए कि साधन और साध्य (आवश्यकता) में सामन्जस्य स्थापित हो सके। प्रो० रॉबिन्स के अनुसार मनुष्य की इच्छाओं का कोई अन्त नहीं है लेकिन उन आवश्यकताओं एवं इच्छाओं की पूर्ति करने वाले साधनों की मात्र सीमित है इसलिए साधन व आवश्यकताओं में सन्तुलन बनाना ही अर्थशास्त्र का कार्यक्षेत्र है।

प्रो० रॉबिन्स के अनुसार :—

"अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जिसमें साध्यों तथा वैकल्पिक प्रयोग वाले सीमित साधनों के मध्य पारस्परिक सम्बन्ध के रूप में मानव व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।"

प्रो० रॉबिन्स की अर्थशास्त्र की परिभाषा का विश्लेषण करने पर निम्न बातें सामने आती है :—

1- मनुष्य की आवश्यकताएं अनन्त या असीमित है।
2- इन आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन सीमित होते है।
3- इन साधनों के अनेक वैकल्पिक प्रयोग हो सकते है।
4- मनुष्य को इन आवश्यकताओं की तीव्रता में अन्तर पाया जाता है।
5- अर्थशास्त्र मानव व्यवहार के अध्ययन पर आधारित है।
6- मनुष्य के सामने साधनों के चयन की समस्या होती है जो कि अर्थशास्त्र का मूल-आधार है।

सीमित साधन केन्द्रित परिभाषा परिभाषा की आलोचना :—

इस विचारधारा में अर्थशास्त्र की परिभाषा को एक व्यापक क्षेत्र प्रदान किया लेकिन मनुष्य की आवश्यकता को ही अर्थशास्त्र का मूल उद्देश्य मानना कुछ सीमा तक सही नहीं है। इस परिभाषा की आलोचना मुख्यतः निम्न आधारों पर की गयी :—

1- इस परिभाषा ने अर्थशास्त्र के क्षेत्र को एक साथ अधिक विस्तृत और अधिक संकीर्ण बना दिया है।
2- रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र को केवल वास्तविक विज्ञान माना है, यह मान्यता त्रुटि पूर्ण है।
3- साधन तथा साध्य शब्दों का अर्थ अस्पष्ट है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान